

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 25 August 2026

मां की मेहनत और बेटी के जज्बे से बनी IAS-दिव्या तंवर की प्रेरणादायक कहानी

Publisher

Published on 18 Oct 2025



आईएस दिव्या तंवर की कहानी यह साबित करती है कि कठिन परिस्थितियां कभी किसी के सपनों को रोक नहीं सकतीं। यह कहानी महज परीक्षा में सफलता की नहीं है, बल्कि यह एक मां के विश्वास और एक बेटी के अदम्य संकल्प की मिसाल है। दिव्या ने अपने जीवन में साबित किया कि कठिन मेहनत और दृढ़ इरादे से किसी भी बाधा को पार किया जा सकता है।

दिव्या का बचपन आसान नहीं रहा। उनकी जिंदगी में वह समय आया जब उनके पिता का देहांत हो गया। परिवार की आर्थिक स्थिति अचानक कमजोर हो गई और मां को अपने परिवार के लिए मजदूरी करनी पड़ी। ऐसे कठिन हालात में भी उन्होंने अपनी बेटी को पढ़ाई से दूर नहीं होने दिया। मां ने दिन-रात मेहनत की और दिव्या की पढ़ाई के लिए हर संभव कोशिश की।

मां की मेहनत और साहस के कारण दिव्या ने अपने सपनों को कभी झुकने नहीं दिया। उन्होंने कठिन परिस्थितियों के बावजूद पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और परीक्षा की तैयारी में जुट गई। महंगी कोचिंग और सुविधा का अभाव उनके मार्ग में बाधा नहीं बन पाया। दिव्या ने यह साबित किया कि मेहनत और आत्मविश्वास ही असली कुंजी है।

21 साल की उम्र में दिव्या ने आईपीएस की परीक्षा में सफलता हासिल की और देश के लिए सेवाएं देने वाली अधिकारी बनीं। उनकी इस उपलब्धि ने न केवल उनके परिवार का नाम रोशन किया, बल्कि यह दिखाया कि कठिन परिस्थितियों में भी निरंतर प्रयास से बड़े मुकाम हासिल किए जा सकते हैं।

इसी सफलता के अगले ही वर्ष, 22 साल की आयु में दिव्या तंवर ने आईएस परीक्षा में सफलता हासिल कर अपने करियर की नई ऊंचाइयों को छू लिया। यह उपलब्धि केवल उनके लिए ही नहीं, बल्कि उन सभी युवाओं के लिए प्रेरणा है जो सीमित संसाधनों के बावजूद अपने सपनों को पूरा करना चाहते हैं।

दिव्या की कहानी यह भी दर्शाती है कि माता-पिता का समर्थन और विश्वास किसी भी छात्र के लिए सबसे बड़ा प्रेरक स्रोत हो सकता है। मां के त्याग और मेहनत ने दिव्या को हमेशा आगे बढ़ने की ऊर्जा दी। उनका संघर्ष यह साबित करता है कि यदि व्यक्ति में

सीखने की लगन और आत्मविश्वास है, तो कोई भी मुश्किल परिस्थिति उसे रोक नहीं सकती।

दिव्या तंवर आज सिर्फ एक आईएस अधिकारी नहीं हैं, बल्कि वह देश के युवाओं के लिए प्रेरणा का प्रतीक बन गई हैं। उनकी कहानी यह संदेश देती है कि अगर सही दिशा में मेहनत और प्रयास किए जाएं, तो कोई भी बाधा व्यक्ति के सपनों को रोक नहीं सकती। दिव्या यह साबित कर चुकी हैं कि महंगे कोचिंग या सुविधाओं से ज्यादा जरूरी है मेहनत, धैर्य और दृढ़ इरादे से सपनों को पाने का जज्बा।

उनकी सफलता यह भी याद दिलाती है कि शिक्षा और आत्मनिर्भरता किसी भी परिस्थिति में जीवन बदल सकती है। दिव्या के जीवन ने यह दिखाया कि माता-पिता का त्याग और बच्चों का समर्पण मिलकर असंभव को भी संभव बना सकते हैं। आज उनकी कहानी लाखों छात्रों और युवाओं को यह प्रेरणा देती है कि कठिन परिश्रम और दृढ़ इरादे से किसी भी सपने को सच किया जा सकता है।

दिव्या का कहना है, “मेरी सफलता का श्रेय मेरी मां को जाता है। उनके विश्वास और त्याग ने मुझे हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। कठिन परिस्थितियों में भी अगर आप अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखें और निरंतर प्रयास करें, तो सफलता अवश्य मिलेगी।”

इस कहानी ने यह भी साबित किया कि केवल आर्थिक स्थिति या संसाधनों की कमी व्यक्ति की सफलता में बाधा नहीं बन सकती। एक मजबूत मानसिकता, सीखने की लगन और परिवार का समर्थन सफलता की असली कुंजी हैं।

दिव्या तंवर की प्रेरणादायक कहानी आज हर उस युवा के लिए उदाहरण है, जो अपने जीवन में किसी भी कठिनाई को पार कर अपने सपनों को हासिल करना चाहता है। उनके संघर्ष और उपलब्धियों ने यह संदेश दिया है कि अगर मेहनत, आत्मविश्वास और परिवार के विश्वास के साथ कदम बढ़ाएं जाएं, तो किसी भी चुनौती को पार करना आसान हो सकता है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsoever.